प्रेस विज्ञप्ति

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास – 2010

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

अणुव्रत अनुशास्ता पदाभिरोहण समारोह

'अणुव्रत की चेतना जगाकर हिंसा और अपराध को रोका जा सकता है'

– आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 31 जुलाइं, 2010

अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्वभारती एवं अणुव्रत न्यास तीनों केन्द्रीय संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में सरदारशहर में अणुवत अनुशास्ता पदाभिवंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। केन्द्रीय पदाधिकारियों सहित देशभर के कोने–कोने से आए हुए अणुव्रत कार्यकर्ताओं की आज विशाल उपस्थिति रही।

इस अवसर पर अपना प्रेरक उद्‌बोधन देते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने फरमाया – आज सर्वत्र हिंसा और अपराध का बोलबाला है। आदमी हिंसा और अपराध में चला जाता है उसक पीछे दो तत्व जिम्मेदार है – मोह और तृष्णा। जब मोह होता है तो तृष्णा बढ़ती है और तृष्णा बढ़ती है ता मोह और बढ़ जाता है। मोह और तृष्णा से आदमी की वृत्ति विकृत हो जाती है और वृत्ति विकृत होती है तो चित्त दूषित हो जाता है। जब चित्त दूषित हो जाता है तो वह अपराध और हिंसा में चला जाता है।

पूज्यप्रवर ने कहा – अपराध तीन कारणों से होता है – (1) अज्ञानवश (2) अभाववश और (3) आवेशवश। पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का प्रवर्तन किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत को आगे बढ़ाने हेतु भव्य पुरुषार्थ किया। हर साल से अणुव्रत का अभियान अच्छी गति से चल रहा है। पूज्यप्रवर के महाप्रयाण के साथ ही इसे आगे बढ़ाने का दायित्व मुझ पर आ गया है। अणुव्रत महासमिति ने प्रतिक रूप में आज पदाभिवंदना के रूप में मनाने का निर्णय किया है। आज मैं संकल्प करता हूं कि अणुव्रत के अभियान को मैं अपनी पूरी क्षमता के साथ आगे बढ़ाने का कार्य करता रहूंगा।

पूज्य आचार्यवर ने कहा – अणुव्रत की चेतना अनुकंपा की चेतना है और अनुकंपा की चेतना को जगाया जाये तो निश्चित रूप से हिंसा और अपराध की चेतना पर अंकुश लगाया जा सकता है।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने फरमाया – मनुष्य ने वैज्ञानिक आविष्कारों के जरिये आकाश में उड़ना सीख लिया, पाताल में पहुंचना सीख लिया लेकिन धरती पर रहकर एक अच्छा जीवन नहीं सिखा। पूज्य गुरुदेव ने धरती पर रहकर अच्छा जीवन जीने के लिए अणुव्रत का उपक्रम दिया। इस हेतु उन्होंने कुछ प्रयोग भी बताये। इनके अनुसरण से आदमी अच्छा जीवन जी सकता है। आचार्यश्री महाश्रमण में अनेक मौलिक विशेषताएं हैं। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सेवा और सन्निधि से मिली ऊर्जा का उपयोग कर वे अणुव्रत के अभियान को और आगे बढ़ाने में पूर्ण रूपेण सफल होंगे ऐसा विश्वास है।

अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलालजी ने कहा – आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा जीवन का एक नया अर्थ दिया। उन्होंने अनेक कार्यकर्ता तैयार किए। ये सारे कार्यकर्त्ता अणुव्रत के दीपों में स्नेह डालते रहे हैं। पूज्य प्रवर ने मुझे इंगित किया और मुझे अणुव्रत के साथ जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में अणुव्रत की गूंज चहुं ओर बढ़ती रहे यीह अभ्यर्थना।

मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी ने कहा – आदमी मंदिर–मस्जिद या धर्मस्थान में जाए या न जाए लेकिन वह शांतिपूर्ण–सौहार्द जीवन जीता है तो वह धार्मिक है। अणुव्रत यही सिखाता है।

अणुव्रत प्रवक्ता श्री छगनलालजी शास्त्री, श्री मोहनभाई जैन, श्री महावीरराजजी गेलड़ा, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री निर्मलजी रांका, अणुविभा के श्री तेजकरणजी सुराणा, अणुव्रत व्यास के श्री धनराजजी बोथरा, डॉ. नरेन्द्रजी शर्मा 'कुसुम' श्री ललितजी नाहटा, श्री के.एल. पटावरी, श्री अर्जुनजी मेड़तवाल, श्री सवाईसिंहजी, सुशीलजी जैन, संचयजी जैन आदि ने अभिवंदना के स्वर प्रस्तुत किए। केन्द्रीय अधिकारियों ने पूज्यप्रवर को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। आभार ज्ञापन श्री डालचन्दजी चिण्डालिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत महासमिति के संरक्षक डॉ. महेन्द्रजी कर्णावट ने किया।

– संकलन : अर्जुन मेड़तवाल

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)